जल संसाधनों का सांस्कृतिक महत्त्व : हिन्दी साहित्य में जल प्रबंधन के प्रतिबिम्ब

- सर्वजीत कुमार पाल

सारांश

जल, जीवन का आधार और सृष्टि की आधारशिला है। यह एक ऐसा तत्व है जो हमारे जीवन को संचालित करता है, हमारी पृथ्वी को हरित बनाता है, और हमारे ग्रह को जीवन देता है। जल के बिना, जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। प्राचीन ग्रंथों में जल को पवित्र और शुद्धिकारक माना गया है, और इसका उपयोग पूजा-पाठ और अनुष्ठानों में किया जाता रहा है। इन ग्रंथों में जल के तीन रूपों का वर्णन किया गया है: स्थिर जल (तालाब, नदी, समुद्र), गतिशील जल (वर्षा, नहर, जलप्रपात), और वायुमंडलीय जल (बादल, वृष्टि)। वैदिक साहित्य में जल के महत्त्व को दिखाते हुए उसे औषधि के स्वरुप बताया गया है। इसी प्रकार अन्य साहित्यिक ग्रंथों में भी जल के महत्वों को देखते हुए इसके संरक्षण और संवर्धन पर जोर दिया गया है। हिंदी साहित्य में भी जल के सामाजिक और सांस्कृतिक महत्वो को देखते हुए जल के प्रबंधन की बातें कही गई हैं। प्रस्तुत शोध लेख में हिंदी साहित्य में प्रतिबिंबित जल के प्रबंधन के उपायों एवं जल के विविध रूपों में प्रयोग व क्रियान्वयन का उल्लेख सम्मिलित है।

संकेत शब्द - जल प्रबंधन, जल का महत्त्व, हिंदी साहित्य, जल स्त्रोत, प्रकृति।

शोध आलेख

पृथ्वी पर जीवन बनाए रखने के लिए जल सबसे आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों में से एक है। प्रकृति में जल का अपार भंडार है, फिर भी मानव की उपयोग के लिए जल सीमित मात्रा में उपलब्ध है। इन्ही सीमित मात्रा में उपलब्ध जल का प्रयोग मानव अपने जीवन के विभिन्न हिस्सों में करता है। जल का भारतीय सांस्कृतिक जीवन व साहित्य में विशेष स्थान रहा है। भारतीय संस्कृति में जल के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए नदियों को माँ का दर्जा दिया गया है। हिंदू धर्म में विश्वास ज़ाहिर करने के लिए शपथ ग्रहण करने के समय जल का उपयोग किया जाता है। इसकी प्रमुख अवधारणा यह है कि जल को हाथ में लेकर कोई भी व्यक्ति झूठ नहीं बोलता। विवाह संस्कार के समय कुएं और तालाब का महत्त्व गावों के लोगो के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है। तालाब पर महिलाएं समूह में जाती हैं तथा मंगल गीत गाती हैं। इसके उपरांत तालाब किनारे बैठकर जल की पूजा कर विवाह को बिना बिघ्न के पूर्ण होने की कामना करती हैं। ऐसी भी मान्यता है कि बारात निकलने से पूर्व भी दूल्हा तालाब किनारे जाकर पारंपरिक/ सामाजिक रीति-रिवाज के अनुसार भगवान की आराधना करता है।[1] तालाब बनाते समय उसे बनाने वाले लोग बिन बुलाये ही आ जाते थे। इन लोगों को बुलई कहा जाता था। इन्हें सम्पूर्ण गांव की जानकारी होती थी। कहाँ कैसी जमीन है, किसकी जमीन है, इससे पहले गाँव में कहाँ-कहाँ तालाब बावड़ी बन चुकी है और कहाँ-कहाँ नई बावड़ी या तालाब बनाये जा सकते हैं, इस प्रकार की समस्त जानकारियां बुलई को कंठस्थ रहती थी। इसके अलावा ये समस्त जानकारियां बुलई लोग बारीकी के साथ लिख

कर रखते थे।[2] सम्पूर्ण सृष्टि में विद्यमान जड़ चेतन सभी पदार्थों की उत्पत्ति प्रकृति में व्याप्त पञ्च तत्वों से हुई है। ये पंचतत्व हैं- भूमि, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश। ये पांच तत्व ही चराचर के चलायमान होने के कारण है। रामचरितमानस के किष्किन्धाकाण्ड में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं कि- छिति जल पावक गगन समीरा, पञ्च रचित अति अधम सरीरा|

पौराणिक साहित्यों में जल के प्रति विशेष श्रद्धा भावना दिखाई गई है। वैदिक साहित्य में नदियों को माता का दर्जा दिया गया है तथा उन्हें पूजनीय माना गया है। अन्य पौराणिक ग्रंथों जैसे रामायण, महाभारत में जल का उल्लेखनीय वर्णन मिलता है। प्रकृति और प्राकृतिक संपदाओं के प्रति संरक्षण की इस परंपरा का निर्वहन हिंदी साहित्य में भी भली-भांति हुआ है। हिंदी साहित्य में ऐसी अनेक रचना दृष्टव्य हैं जिनमे जल को सरक्षित करने की भावना विद्यमान है।

हिंदी साहित्य में भी जल के प्रबंधन के लिए बहुत से उपाय किये गये मिलते हैं। जल के महत्व और उसकी विशेषता को साहित्य में विशेष स्थान दिया गया है। साहित्य में जल को व्यक्ति के साथ समायोजित कर दिया गया है। जैसे कबीर दास की एक पंक्ति है-

ऊँचे पानी ना टिके, नीचे ही ठहराय |

नीचा हो सो भारी पी, ऊँचा प्यासा जाय ||

अर्थात पानी नीचे बहता है। और यह हवा में लटका नहीं रहा। जो लोग जमीनी हकीकत जानते हैं वे पानी का आनंद लेते हैं, जो हवा में तैर रहे हैं वे नहीं कर सकते। पानी हमेशा नीचे ही बहता है और निचे ही ठहरा रहता है। जो व्यक्ति नीचे रहता है अर्थात पानी के पास रहता है वही पानी को ग्रहण कर सकता है, जो ऊपर रहता है अर्थात पानी से दूर रहता है वो पानी ग्रहण नहीं कर सकता। इसका तात्पर्य व्यक्ति की इच्छाओं से है। जो व्यक्ति अपने आचरण से जमीनी स्तर से जुड़े रहते हैं वे लोग सभी प्रकार की उपलब्धियों को प्राप्त करते हैं। लेकिन जो लोग अपने स्तर भूलकर स्वयं को ऊँचा दिखाने की कोशिश करते हैं, अंत में उन्हें कुछ भी प्राप्त नही होता है।

जयशंकर प्रसाद ने कामायनी के चिंता सर्ग में जल के विनाशकारी प्रभाव का वर्णन किया है। जल प्रलय के फलस्वरूप हुई तबाही को एक व्यक्ति अश्रुपूर्ण नेत्रों से एकटक देख रहा है, और अपनी दुःख संवेदना को अपने मन मस्तिष्क में समेट रहा है।

हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर , बैठ शिला की शीतल छांह
एक पुरुष, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह|

नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन|[3]

अर्थात प्रलय के उपरांत वह व्यक्ति हिमालय की ऊँची चोटी पर बैठकर अश्रुपूर्ण नयनों से अपार जलराशि को देख रहा है। वह व्यक्ति अपने चारो ओर जल की प्रधानता देखता है शिला-खंड के पास से प्रवाहित होने वाला जल द्रव रूप में था, और बर्फ के रूप में ठोस था लेकिन द्रव या बर्फ़ वास्तव में जल के ही दो रूप हैं। कवि का अभिप्राय यह है की जिस प्रकार जल तत्व एक होते हुए भी तरल और सघन रूपों में विद्यमान है, उसी प्रकार ईश्वर की सत्ता एक होते हुए भी सृष्टि में विविध रूपों में प्रतिभाषित होती है। जयशंकर प्रसाद की ये पंक्ति जल के विविध रूपों को दर्शाती है। सृष्टि में जल तीन अवस्थाओ में पाया जाता है जिसमे से दो अवस्थाये द्रव और ठोस का वर्णन कामायनी में जयशंकर प्रसाद ने किया है।

समुद्र में भटका हुआ आदमी
प्यासा ही मरता है
भूख से कुछ ज्यादा दिन लड़ सकता है
समुद्र का पानी खारा और कसैला है
जो उलट जाता है पेट से
पीने पर भी[4]

राजेश पाल की ये पंक्तिया जल के व्यापक महत्व को इंगित करती हैं। व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास के लिए भोजन की आवश्यकता होती है परन्तु व्यक्ति केवल भोजन से ही जीवित नहीं रहता। जीवित रहने के लिए भोजन के साथ साथ जल की भी आवश्यकता होती है। यहाँ तक की अगर भोजन कुछ एक दिन ना भी मिले तो व्यक्ति जीवित रह सकता है लेकिन पानी के बिना व्यक्ति के जीवित रहने की कल्पना भी नही की जा सकती है। इस दृष्टिकोण से व्यक्ति के लिए वरीयता क्रम में भोजन से पहले पानी आता है। यहाँ राजेश पाल की पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति अगर समुद्र अर्थात विकट परिस्थिति में फसा हुआ है तो उसकी मृत्यु प्यास से ही हो जाती है। क्योकि समुद्र का पानी खारा होता है जिसे व्यक्ति अगर पीना भी चाहे तो नही पी सकता। खारा पानी व्यक्ति अगर पी ले तो वह स्वयं ही व्यक्ति के पेट से तुरंत बाहर आ जाता है।

केदारनाथ सिंह के कविता कर्म में प्रकृति और पर्यावरण की उपस्थिति बरगद के जड़ों की तरह इतनी गहरी और विस्तीर्ण है कि उनकी कुछ एक कविताओं को पर्यावरण केन्द्रित कहना अन्याय पूर्ण होगा। उनकी कई ऐसी कवितायेँ है जो आपाततः प्रकृति और पर्यावरण की परिधि से बाहर दिखती हैं, लोक प्रकृति के ताने बाने को अन्तःसलिला की तरह लपेटकर रखती हैं। एक कविता में केदारनाथ जी ने सूख गये कुओं का उल्लेख किया है-

कुएँ क्या हुए?
उस बस्ती में जहाँ कुओं को लेकर
एक भयानक चुप्पी थी
मैंने लोगों से पूछा

कुओं को ढँक लिया है घास ने–
किसी एक ने उत्तर दिया

जिसने उत्तर दिया उसका चेहरा
लगभग अदृश्य था

क्यों, कुओं ने क्या बिगाड़ा घास का?
मैंने पूछा
बिगाड़ा कुछ नहीं,
बस घास का फ़ैसला
कि अब कुएँ नहीं रहेंगे

हद है, अगर कुएँ नहीं रहेंगे
तो पानी कहाँ पिएँगे लोग?
मैंने झल्लाकर पूछा

लोगों का क्या
कहते हैं उन्हें पता चल गया है
किसी जादुई सोते का–
उसी आवाज़ ने फिर हस्तक्षेप किया

फिर क्या करें कुओं का?
क्या उन्हें क्रेन से उठाएँ
और रख आएँ संग्रहालय में
मैंने धीरे से पूछा

नहीं, नहीं...अबकी लोग चिल्लाए
छोड़ दो कुओं को
जहाँ वे हैं जैसे वे हैं
गिरने दो
अपने-आप अतल में
गिर जाने दो कुओं को

लोगों की आवाज़ में
निर्जल कुओं की ठंडी गूँज थी।[5]

वर्तमान समय में कुओं की दशा का मार्मिक उल्लेख केदारनाथ जी ने किया है। वर्तमान समय में कुएं सुख गये है जिसको घास द्वारा ढँक दिया गया है फिर भी लोग उसकी सुध नही लेते हैं। लोगो को यह समझ में नही आ रहा है की अगर कुएं नही रहेंगे तो पानी कहा से पियेंगे। पानी प्राप्त करने का कोई जादुई स्त्रोत नही होता है। अगर यही हाल रहा तो कुआँ भी अन्य विस्मृत चीजों की भांति विलुप्त हो जायेगा तथा संग्रहालयों में ही देखने को मिल सकता है। अतः केदारनाथ जी ने लोगों से विनती की है कि कुओं को संभलकर रखें नही तो वह दिन दूर नही जब पीने के पानी के लिए मारामारी की नौबत आ जाएगी। इसके आलावा एक अन्य कविता में भी केदारनाथ जी ने जल के विशिष्ट लक्षणों का उल्लेख किया है-

पानी एक रोशनी है
अंधेरे में यही एक बात है
जो तुम पूरे विश्वास के साथ
दूसरे से कह सकते हो

ओडिया और अंग्रेजी भाषा के समालोचक सीताकांत महापात्र द्वारा लिखी गई कविता जिसमे नियमगिरि, खाम्बसी गाव की एक चौरासी वर्षीया बूढी महिला की कहानी को प्रदर्शित किया गया है। इस कविता में इस गाँव के सिमटते हुए जल स्त्रोतों का मार्मिक उल्लेख किया गया है। भविष्य में जल स्त्रोतों के न रहने के कारण पानी की प्राप्ति के लिए कष्ट झेलने पड़ सकते हैं। वर्तमान में इस गाँव में सिमित मात्रा में ही पानी उपलब्ध है। इसका प्रमुख कारण लोगों का लालच ही है। लोग अपने लालच के लिए इन पारंपरिक जलाशयों अथवा जलस्त्रोतों को नष्ट करते जा रहे हैं ये जाने बगैर की भविष्य में पानी के लिए कितनी समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। अभी तो पानी की समस्या थोड़ी कम है लेकिन अगर इसी तरह से जलस्त्रोत सिमटते रहे तो एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब पानी की एक बूंद मिल पाना असंभव होगा। इसी लालच के चलते पानी की एक एक बूंद सुख जाएगी और खोजने से भी पानी नही मिलेगा। पानी नहीं होने से वनस्पति पेड़-पौधे नही बचेंगे और अगर पेड़ पौधे नही रहे तो पेड़ के नीचे रहने वाले कुलदेवता भी नही रहेंगे। भविष्य में झरनों में भी पानी नही देखने को मिलेगा।

एक मुट्ठी भर चावल कणों की तरह
चारों तरफ कलकल करते झरनों के पानी की
नहीं मिल पाएगी कल एक बूँद
सूख जाएगी सब तुम्हारे लोभ की गरमी से
कल खोजते समय

ये धुंधली आँखें देखेंगी

वे पवित्र पेड़ नहीं

पेड़ के नीचे कुलदेवता नहीं

झरनों में पानी नहीं[6]

निष्कर्ष-

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि जीवन के लिए जल एक विशिष्ट पदार्थ है। अतः जल के संरक्षण एवं प्रवर्धन के लिए उपाय प्रारंभिक समय से ही किये जाते रहे हैं। इसके उपायों के वर्णन समय समय पर अभिलेखों एवं साहित्यों में भी किये जाते रहे हैं। हिंदी साहित्य में भी जल संसाधनों के वर्णन मिलते हैं। प्रमुख साहित्यकारों की कृतियों में जल प्रबंधन के साक्ष्य इस बात के द्योतक हैं कि साहित्य के क्षेत्र में भी जल से सम्बंधित मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है तथा इसे भविष्य के लिए सुरक्षित करने के उपायों पर बल दिया गया है। अगर जल को सरक्षित नहीं किया गया तो आने वाले समय में जल के लिए युद्ध होना भी सम्भव है। अतः अपने भविष्य को ध्यान में रखकर जल को संरक्षित करने का कार्य करना चाहिए।

[1] व्यास, रितेश, 2021,जलस्त्रोतों के निर्माण की तकनीक और महत्त्व, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर, पृष्ट-125

[2] मिश्र, अनुपम, 2009, आज भी खरे हैं तालाब, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ट- 21

[3] प्रसाद, जयशंकर, कामायनी, भाग-1

[4] पाल, राजेश, 2016, पानी भीतर आग, अंतिका प्रकाशन, गाज़ियाबाद, पृष्ट- 19

[5] सिंह, केदारनाथ, पानी की प्रार्थना, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,

[6] महापात्र, सीताकांत, 2012, ओडिया भाषा की प्रतिनिधि कवितायें, यश पब्लिकेशन्श, पृष्ठ-143

सर्वजीत कुमार पाल
शोध छात्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस
ईमेल - sarvajeet@bhu.ac.in मोबाइल न० 7860505489